p17 Aufgabe zum 1x.12.

Versucht bitte, den Text wirklich Zeile für Zeile in der rechten Spalte zu übersetzen und nicht gleich auf das je Folgende zu schielen. Sprache verläuft im zeitlichen Kontinuum vom einen zum folgenden Element und nicht von später nach früher. Kein Element habe ich länger als fünf Wörter gefasst.

|  |  |
| --- | --- |
| **Zuerst ein bisschen Wiederholung.** | |
| ἐὰν δὲ μὴ συμβουλεύηταί μοι τὸ παράπαν |  |
| ἢ συμβουλεύοντι δῆλος ᾖ |  |
| μηδαμῇ πεισόμενος, |  |
| ἐπὶ τὸν τοιοῦτον |  |
| οὐκ ἔρχομαι συμβουλεύσων, |  |
| βιασόμενος δὲ |  |
| οὐδ᾽ ἂν ὑὸς ᾖ μου. |  |
| δούλῳ δὲ συμβουλεύσαιμ᾽ ἂν |  |
| καὶ μὴ ἐθέλοντά γε |  |
| προσβιαζοίμην· [331ξ] |  |
| πατέρα δὲ ἢ μητέρα |  |
| οὐχ ὅσιον ἡγοῦμαι |  |
| προσβιάζεσθαι |  |
| μὴ νόσῳ παραφροσύνης ἐχομένους, |  |
| ἐὰν δέ τινα καθεστῶτα ζῶσι βίον, |  |
| ἑαυτοῖς ἀρέσκοντα, |  |
| ἐμοὶ δὲ μή, |  |
|  | ... <dann gilt,> ... |
| μήτε ἀπεχθάνεσθαι |  |
| μάτην νουθετοῦντα |  |
| μήτε δὴ κολακεύοντά γε |  |
| ὑπηρετεῖν αὐτοῖς, |  |
| πληρώσεις ἐπιθυμιῶν ἐκπορίζοντα |  |
| ἃς αὐτὸς ἀσπαζόμενος |  |
| οὐκ ἂν ἐθέλοιμι ζῆν. |  |
| **NEU** | |
| ταὐτὸν δὴ καὶ |  |
| περὶ πόλεως αὑτοῦ |  |
| διανοούμενον |  |
| χρὴ ζῆν τὸν ἔμφρονα· |  |
| λέγειν μέν, |  |
| εἰ μὴ [331δ] |  |
| καλῶς αὐτῷ φαίνοιτο |  |
| πολιτεύεσθαι, |  |
| εἰ μέλλοι |  |
| μήτε ματαίως ἐρεῖν |  |
| μήτε ἀποθανεῖσθαι λέγων, |  |
| βίαν δὲ πατρίδι |  |
| πολιτείας μεταβολῆς |  |
| μὴ προσφέρειν, |  |
| ὅταν ἄνευ φυγῆς |  |
| καὶ σφαγῆς ἀνδρῶν |  |
| μὴ δυνατὸν ᾖ |  |
| γίγνεσθαι τὴν ἀρίστην, |  |
| ἡσυχίαν δὲ ἄγοντα |  |
| εὔχεσθαι τὰ ἀγαθὰ |  |
| αὑτῷ τε καὶ τῇ πόλει. |  |
| κατὰ δὴ τοῦτον τὸν τρόπον |  |
| ἐγὼ ὑμῖν τ᾽ ἂν συμβουλεύοιμι, |  |
| συνεβούλευον δὲ καὶ |  |
| Διονυσίῳ μετὰ Δίωνος, |  |
| ζῆν μὲν |  |
| τὸ καθ᾽ ἡμέραν πρῶτον, |  |
| ὅπως ἐγκρατὴς αὐτὸς αὑτοῦ |  |
| ὅτι μάλιστα [331ε] ἔσεσθαι μέλλοι |  |
| καὶ πιστοὺς φίλους τε |  |
| καὶ ἑταίρους κτήσεσθαι, |  |
| ὅπως μὴ πάθοι |  |
| ἅπερ ὁ πατὴρ αὐτοῦ, |  |
| ὃς παραλαβὼν |  |
| Σικελίας πολλὰς καὶ μεγάλας πόλεις |  |
| ὑπὸ τῶν βαρβάρων ἐκπεπορθημένας, |  |
| οὐχ οἷός τ᾽ ἦν |  |
| κατοικίσας πολιτείας[[1]](#endnote-1) ἐν ἑκάσταις |  |
| καταστήσασθαι πιστὰς ἑταίρων ἀνδρῶν, |  |
| οὔτε ἄλλων δή [332α] ποθεν ὀθνείων |  |
| οὔτε ἀδελφῶν, |  |
| οὓς ἔθρεψέν τε αὐτὸς |  |
| νεωτέρους ὄντας, |  |
| ἔκ τε ἰδιωτῶν ἄρχοντας |  |
| καὶ ἐκ πενήτων πλουσίους |  |
| ἐπεποιήκει διαφερόντως. |  |
| τούτων κοινωνὸν τῆς ἀρχῆς οὐδένα |  |
| οἷός τ᾽ ἦν |  |
| πειθοῖ καὶ διδαχῇ |  |
| καὶ εὐεργεσίαις καὶ συγγενείαις |  |
| ἀπεργασάμενος ποιήσασθαι, |  |
| Δαρείου[[2]](#endnote-2) δὲ ἑπταπλασίῳ φαυλότερος ἐγένετο, |  |
| ὃς οὐκ ἀδελφοῖς πιστεύσας |  |
| οὐδ᾽ ὑφ᾽ αὑτοῦ τραφεῖσιν, |  |
| κοινωνοῖς δὲ μόνον |  |
| τῆς τοῦ Μήδου τε [332β] |  |
| καὶ εὐνούχου χειρώσεως, |  |
| διένειμέ τε μέρη μείζω ἕκαστα |  |
| Σικελίας πάσης ἑπτά, |  |
| καὶ πιστοῖς ἐχρήσατο τοῖς κοινωνοῖς |  |
| καὶ οὐκ ἐπιτιθεμένοις |  |
| οὔτε αὐτῷ οὔτε ἀλλήλοις, |  |
| ἔδειξέν τε παράδειγμα |  |
| οἷον χρὴ |  |
| τὸν νομοθέτην καὶ βασιλέα |  |
| τὸν ἀγαθὸν γίγνεσθαι· |  |
| νόμους γὰρ κατασκευάσας |  |
| ἔτι καὶ νῦν διασέσωκεν |  |
| τὴν Περσῶν ἀρχήν. |  |
| ἔτι δὲ Ἀθηναῖοι πρὸς τούτοις, |  |
| οὐκ αὐτοὶ κατοικίσαντες, |  |
| πολλὰς τῶν Ἑλλήνων πόλεις |  |
| ὑπὸ βαρβάρων ἐμβεβλημένας |  |
| ἀλλ᾽ οἰκουμένας παραλαβόντες, |  |
| ὅμως [332ξ] ἑβδομήκοντα ἔτη |  |
| διεφύλαξαν τὴν ἀρχὴν |  |
| ἄνδρας φίλους |  |
| ἐν ταῖς πόλεσιν ἑκάσταις κεκτημένοι. |  |
| Διονύσιος δὲ |  |
| εἰς μίαν πόλιν |  |
| ἁθροίσας πᾶσαν Σικελίαν, |  |
| ὑπὸ σοφίας πιστεύων οὐδενί, |  |
| μόγις ἐσώθη· |  |
| πένης γὰρ ἦν ἀνδρῶν |  |
| φίλων καὶ πιστῶν, |  |
| οὗ μεῖζον σημεῖον |  |
| εἰς ἀρετὴν καὶ κακίαν |  |
| οὐκ ἔστιν οὐδέν, |  |
| τοῦ ἔρημον |  |
| ἢ μὴ τοιούτων ἀνδρῶν εἶναι. |  |
| ἃ δὴ καὶ Διονυσίῳ συνεβουλεύομεν |  |
| ἐγὼ καὶ Δίων, |  |
| ἐπειδὴ τὰ παρὰ τοῦ πατρὸς [332δ] |  |
| αὐτῷ συνεβεβήκει οὕτως, |  |
| ἀνομιλήτῳ μὲν παιδείας, |  |
| ἀνομιλήτῳ δὲ συνουσιῶν τῶν προσηκουσῶν |  |
| γεγονέναι, πρῶτον, |  |
| ἡλικιώτης ἔπειτα ταύτῃ ὁρμήσαντα |  |
| φίλους ἄλλους αὑτῷ τῶν οἰκείων |  |
| ἅμα καὶ ἡλικιωτῶν |  |
| καὶ συμφώνους πρὸς ἀρετὴν κτήσασθαι, |  |
| μάλιστα δ᾽ αὐτὸν αὑτῷ, |  |
| τούτου γὰρ αὐτὸν |  |
| θαυμαστῶς ἐνδεᾶ γεγονέναι, |  |
| λέγοντες οὐκ ἐναργῶς οὕτως |  |
| —οὐ γὰρ ἦν ἀσφαλές — |  |
| αἰνιττόμενοι δὲ |  |
| καὶ διαμαχόμενοι τοῖς λόγοις |  |
| ὡς οὕτω μὲν πᾶς ἀνὴρ |  |
| αὑτόν τε καὶ ἐκείνους |  |
| ὧν ἂν ἡγεμὼν γίγνηται σώσει, [332ε] |  |
| μὴ ταύτῃ δὲ τραπόμενος |  |
| τἀναντία πάντα ἀποτελεῖ· |  |

1. πολιτεία hier: Staatsverwaltung, Regierung [↑](#endnote-ref-1)
2. Μῆδος· Zum Sieg des Dareios über Gaumata und Aufteilung des Reiches unter sechs Gefährten s. Wikipedia [Dareios](https://de.wikipedia.org/wiki/Dareios_I.#Die_%E2%80%9ESieben_Perser%E2%80%9C). [↑](#endnote-ref-2)